अध्याय 4: पानी रे पानी

विषय-सूची 9 प्रश्नावली · 15 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	पाठ से — मेरी समझ से (सही उत्तर चुनिए)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	मिलकर करें मिलान — शब्द और उनका अर्थ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	पंक्तियों पर चर्चा — भावार्थ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.4	सोच-विचार के लिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 4.5	शीर्षक	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.6	शब्दों की बात — बात पर बल देना	2 प्रश्न
प्रश्नावली 4.7	समानार्थी शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.8	उपसर्ग — नए शब्द बनाना	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.9	पाठ से आगे — आपकी बात	1 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — पाठ से — मेरी समझ से (सही उत्तर चुनिए)

प्रश्न 1

हमारा भूजल भंडार निम्नलिखित में से किससे समृद्ध होता है? (जल सूख जाने से / पानी बरसने से / तालाब और झीलों से / बाढ़ आने से)

हल

पाठ का मुख्य संदेश यही है कि तालाब, झील आदि जलस्रोतों का पानी धीरे-धीरे रिसकर धरती के भीतर जाता है और भूजल भंडार को भरता है।

पाठ में बताया गया है कि तालाबों को पाट देने से यही भूजल भंडार सूखने लगा।

उत्तर: तालाब और झीलों से। (★ बहुविकल्पीय — 'पानी बरसने से' भी स्वीकार्य है, क्योंकि वर्षा का जल ही रिसकर भूजल बनता है।)

प्रश्न 2

निम्नलिखित में से कौन-सी बात जल-चक्र से संबंधित है? (वर्षा जल का संग्रह करना / समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर बरसना / नदियों का समुद्र में जाकर मिलना / बरसात में चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देना)

हल

जल-चक्र (Water Cycle) का अर्थ है — जल का वाष्प बनना, बादल बनना, वर्षा होना और फिर बहकर समुद्र में लौट जाना।

'समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर बरसना' इसी चक्र का भाग है।

उत्तर: समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर बरसना।

प्रश्न 3

"इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है।" यहाँ किस गलती की ओर संकेत किया गया है? (जल-चक्र की अवधारणा को न समझना / आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग करना / तालाबों को कचरे से पाटकर समाप्त करना / भूजल भंडारण के विषय में विचार न करना)

हल

पाठ में लेखक बार-बार यह दुख प्रकट करता है कि लोगों ने तालाबों को कचरे से भरकर समाप्त कर दिया, जिससे वर्षा का जल धरती में नहीं रिस पाया और भूजल घट गया।

यही वह 'बड़ी गलती' है जिसकी सजा आज जल-संकट के रूप में भुगतनी पड़ रही है।

उत्तर: तालाबों को कचरे से पाटकर समाप्त करना। (★ 'आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग' भी सहायक कारण माना जा सकता है।)

प्रश्नावली 4.2 — मिलकर करें मिलान — शब्द और उनका अर्थ

प्रश्न 1

स्तंभ 1 (वर्षा जल संग्रहण, जल संकट, जल-चक्र, भूजल) को स्तंभ 2 के सही अर्थ से मिलाइए — (1) जमीन के नीचे छिपा जल भंडार। (2) वर्षा के जल को प्राकृतिक अथवा कृत्रिम रूप से (मानवीय प्रयासों से) धरती में संचय करना। (3) जल की अत्यधिक कमी होना। (4) समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर पानी में बदलना और वर्षा के द्वारा पुनः समुद्र में मिल जाना।

हल

वर्षा जल संग्रहण — वर्षा के जल को प्राकृतिक अथवा कृत्रिम रूप से धरती में संचय करना।
जल संकट — जल की अत्यधिक कमी होना।
जल-चक्र — समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर पानी में बदलना और वर्षा द्वारा पुनः समुद्र में मिल जाना।
भूजल — जमीन के नीचे छिपा जल भंडार।

उत्तर: वर्षा जल संग्रहण → (2); जल संकट → (3); जल-चक्र → (4); भूजल → (1)।

प्रश्नावली 4.3 — पंक्तियों पर चर्चा — भावार्थ

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए — (क) "पानी आता भी तो बेकार है।" (ख) "देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसे हालात बन जाते हैं।" (ग) "कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है।" (घ) "अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

हल

(क) जब वर्षा का जल संभालने के लिए तालाब आदि नहीं बचते, तो पानी आकर भी व्यर्थ बह जाता है — इसलिए वह 'बेकार' कहलाता है।

(ख) पानी की भारी कमी के कारण देश के अनेक भागों में सूखे और अकाल जैसी स्थिति बन जाती है।

(ग) बाढ़ या भारी वर्षा के समय जन-जीवन ठप पड़ जाता है — यातायात, कामकाज, सब कुछ कुछ दिनों के लिए रुक जाता है।

(घ) अकाल (जल की कमी) और बाढ़ (जल की अधिकता) — दोनों ही जल के कुप्रबंधन के परिणाम हैं, इसलिए इन्हें एक ही सिक्के के दो पहलू कहा गया है।

उत्तर: चारों पंक्तियाँ जल के कुप्रबंधन की ओर संकेत करती हैं — जल न संभालने से वह व्यर्थ बहता है, कहीं अकाल तो कहीं बाढ़ आती है, और जन-जीवन ठहर जाता है।

प्रश्नावली 4.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) पाठ में धरती को एक बहुत बड़ी गुल्लक क्यों कहा गया है?

हल

जैसे गुल्लक में थोड़ा-थोड़ा धन जमा होता रहता है और आवश्यकता पड़ने पर काम आता है, वैसे ही धरती अपने भीतर वर्षा का जल भूजल के रूप में संचित करती रहती है।
यही संचित जल सूखे के समय हमारे काम आता है। परंतु यदि बिना सोचे-समझे इसे निकालते रहें और भरें नहीं, तो गुल्लक की तरह यह भी खाली हो जाती है।

उत्तर: क्योंकि धरती गुल्लक की तरह वर्षा का जल अपने भीतर भूजल के रूप में जमा करती है, जो ज़रूरत पर काम आता है — पर बिना भरे निकालते रहने पर वह भी खाली हो जाती है।

प्रश्न 2

(ख) जल-चक्र की प्रक्रिया कैसे पूरी होती है?

हल

सूर्य की गर्मी से समुद्र और अन्य जलस्रोतों का पानी भाप बनकर ऊपर उठता है।
ऊपर जाकर यह भाप ठंडी होकर बादल बनती है और वर्षा के रूप में धरती पर बरसती है।
यह जल नदियों-नालों से बहते हुए पुनः समुद्र में मिल जाता है। यह चक्र निरंतर चलता रहता है।

उत्तर: समुद्र का जल भाप बनकर ऊपर उठता है → ठंडा होकर बादल बनता है → वर्षा के रूप में बरसता है → नदियों से बहकर पुनः समुद्र में मिल जाता है — यही जल-चक्र निरंतर चलता रहता है।

प्रश्न 3

(ग) यदि सारी नदियाँ, झीलें और तालाब सूख जाएँ तो क्या होगा?

हल

पीने, खाना बनाने, सिंचाई और उद्योगों — सबके लिए जल का घोर संकट खड़ा हो जाएगा।
फ़सलें सूख जाएँगी, अकाल पड़ेगा, पशु-पक्षी और मनुष्य का जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा; अनेक जीव समाप्त हो सकते हैं।

उत्तर: जल का घोर संकट होगा — पीने, सिंचाई और उद्योग ठप पड़ेंगे, फ़सलें सूखेंगी, अकाल पड़ेगा और मनुष्य तथा जीव-जंतुओं का जीवन संकट में पड़ जाएगा।

प्रश्न 4

(घ) पाठ में पानी को रुपयों से भी कई गुना मूल्यवान क्यों बताया गया है?

हल

रुपयों से हम वस्तुएँ खरीद सकते हैं, परंतु पानी के बिना जीवन ही संभव नहीं।
पानी प्राकृतिक और सीमित संसाधन है; इसे पैसे से बनाया नहीं जा सकता। इसलिए यह धन से भी अधिक मूल्यवान है।

उत्तर: क्योंकि पैसा तो वस्तुएँ खरीद सकता है, पर पानी के बिना जीवन असंभव है; पानी सीमित एवं प्राकृतिक है और इसे धन से बनाया नहीं जा सकता — इसलिए यह रुपयों से भी कई गुना मूल्यवान है।

प्रश्नावली 4.5 — शीर्षक

प्रश्न 1

इस पाठ का शीर्षक 'पानी रे पानी' दिया गया है। पाठ का यह नाम क्यों दिया गया होगा? अपना कारण लिखिए।

हल

पूरा पाठ पानी के महत्व, उसकी कमी और उसके संरक्षण के इर्द-गिर्द घूमता है।
'पानी रे पानी' शीर्षक पानी के प्रति पुकार और चिंता का भाव जगाता है — मानो लेखक पानी को बचाने की गुहार लगा रहा हो। इसलिए यह शीर्षक पाठ के केंद्रीय विषय (जल) को सटीक रूप से दर्शाता है।

उत्तर: क्योंकि पूरा पाठ पानी के महत्व, उसकी कमी और उसे बचाने की चिंता पर केंद्रित है; 'पानी रे पानी' शीर्षक जल के प्रति पुकार और चिंता का भाव जगाकर पाठ के मुख्य विषय को दर्शाता है।

प्रश्नावली 4.6 — शब्दों की बात — बात पर बल देना

प्रश्न 1

इन दो वाक्यों को ध्यान से पढ़िए — "हमारी यह धरती भी इसी तरह की एक गुल्लक है।" / "हमारी यह धरती इसी तरह की एक गुल्लक है।" दूसरे वाक्य में कौन-सा शब्द हटा दिया गया है? उसे हटाने से अर्थ में क्या अंतर आया है?

हल

दूसरे वाक्य में 'भी' शब्द हटा दिया गया है।
'भी' शब्द तुलना और बल का भाव देता है — अर्थात् 'जैसे गुल्लक धन जमा करती है, वैसे ही धरती भी जल जमा करती है'। 'भी' के हटते ही यह तुलना और बल समाप्त हो जाता है और वाक्य साधारण कथन बनकर रह जाता है।

उत्तर: 'भी' शब्द हटाया गया है। 'भी' तुलना और बल का भाव देता है (धरती भी गुल्लक जैसी); उसे हटाने से वाक्य का बल और तुलना समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 2

पाठ में ऐसे ही कुछ और शब्द भी आए हैं जो अपनी उपस्थिति से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इस तरह के शब्दों वाले वाक्यों की सूची बनाइए।

हल

ऐसे बल देने वाले शब्द हैं — भी, तो, ही, केवल, बस आदि। उदाहरण (पाठ के भाव पर आधारित):
'पानी आता भी तो बेकार है।' — 'भी' और 'तो' से बल आया है।
'यह तो हमारी अपनी गलती है।' — 'तो' से बल।
'पानी ही जीवन है।' — 'ही' से बल।

उत्तर: 'भी', 'तो', 'ही', 'केवल' जैसे शब्द वाक्य में बल देते हैं — जैसे 'पानी आता भी तो बेकार है', 'पानी ही जीवन है'।

प्रश्नावली 4.7 — समानार्थी शब्द

प्रश्न 1

नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर समान अर्थ देने वाले शब्द लिखिए (शब्द-भंडार: सूर्य, मेघ, भास्कर, पवन, वारिद, वायु, दिवाकर, जलद, वाष्प, समीर, दिनकर, नीरद) — (क) सूरज की किरण पड़ते ही फूल खिल उठे। (ख) समुद्र का पानी भाप बनकर ऊपर जाता है। (ग) अचानक बादल गरजने लगे। (घ) जल-चक्र में हवा की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

हल

(क) सूरज = सूर्य / भास्कर / दिवाकर / दिनकर
(ख) भाप = वाष्प
(ग) बादल = मेघ / जलद / वारिद / नीरद
(घ) हवा = पवन / वायु / समीर

उत्तर: सूरज → सूर्य/भास्कर/दिवाकर/दिनकर; भाप → वाष्प; बादल → मेघ/जलद/वारिद/नीरद; हवा → पवन/वायु/समीर।

प्रश्नावली 4.8 — उपसर्ग — नए शब्द बनाना

प्रश्न 1

उपसर्ग जोड़कर 'देश', 'पात्र' और 'ज्ञान' शब्दों से नए शब्द बनाइए। (उपसर्ग = किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर नया अर्थ देने वाला शब्दांश, जैसे 'अ' + 'काल' = 'अकाल'।)

हल

देश → प्रदेश, विदेश, स्वदेश, उपदेश, अपदेश, निर्देश।
पात्र → सुपात्र (योग्य व्यक्ति), अपात्र (अयोग्य), विपात्र।
ज्ञान → सुज्ञान, अज्ञान (जानकारी का अभाव), विज्ञान।
(उपसर्ग प्र, वि, स्व, उप, अप, नि, सु, अ आदि शब्द के आरंभ में जुड़कर नया अर्थ देते हैं।)

उत्तर: देश → प्रदेश/विदेश/स्वदेश/उपदेश/अपदेश/निर्देश; पात्र → सुपात्र/अपात्र/विपात्र; ज्ञान → सुज्ञान/अज्ञान/विज्ञान।

प्रश्नावली 4.9 — पाठ से आगे — आपकी बात

प्रश्न 1

धरती की गुल्लक में जलराशि की कमी न हो, इसके लिए आप क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं?

हल

पानी को व्यर्थ न बहाएँ — नल बंद रखें, टपकते नल ठीक कराएँ।
वर्षा-जल संचय (Rain Water Harvesting) करें और तालाब-कुएँ-जोहड़ को साफ़ व सुरक्षित रखें।
पेड़ लगाएँ, ताकि जल धरती में रिसकर भूजल बढ़े; कपड़े-बर्तन धोने आदि में पानी का सोच-समझकर उपयोग करें।
दूसरों को भी जल-संरक्षण के प्रति जागरूक करें।

उत्तर: पानी व्यर्थ न बहाना, टपकते नल ठीक कराना, वर्षा-जल संचय करना, तालाब-कुएँ साफ़ रखना, पेड़ लगाना और जल के सोच-समझकर उपयोग द्वारा भूजल की कमी रोकी जा सकती है।